बड़े शौक-ऐ-शवाब से निकला ऐ रह-गुज़र,
रस्तों से बेफ़िक़्री भी न देखी गयी मेरी,
कहते तो थे कि, आ नाप मुझे,
पास आकर दस्तूरी भी न मिली..!

कशमकश है , तेरी ही जुस्तजू में,
ख़्वाब भी कभी आये तो सही,
रस्तों को नापने की क़वायद भी,
तेरी चाहत-ऐ-दस्तूर से भी वाकिफ़ रही..!